नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

# जलवायु परिवर्तन : भारत की बढ़ती भूमिका

संयुक्त राष्ट्र महासभा के 80 वें सत्र में जलवायु परिवर्तन एक बार फिर केंद्र में रहा. इस बार बहस केवल कार्बन उत्सर्जन तक सीमित नहीं रही, बल्कि 卐जलवायु न्याय卐 और 卐वैश्विक दक्षिण की प्राथमिकताओं卐 पर भी गहराई से चर्चा हुई. यह वह मोड़ है जहां भारत ने न सिर्फ अपनी आवाज बुलंद की, बल्कि विकासशील देशों के साझा हितों को सामने रखने में नेतृत्वकारी भूमिका निभाई. दुनिया जानती है कि जलवायु संकट का सबसे गहरा असर उन्हीं देशों पर पड़ रहा है जिनका उत्सर्जन ऐतिहासिक रूप से न्यूनतम रहा है.

आंकड़े बताते हैं कि औद्योगिक क्रांति से अब तक कुल वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में अफ्रीका का योगदान केवल 4 प्रतिशत और भारत का लगभग 3 .5 प्रतिशत है, जबकि विकसित देशों—विशेषकर अमेरिका और यूरोप—ने मिलकर 50 प्रतिशत से अधिक ग्रीनहाउस गैस छोड़ी हैं. बावजूद इसके, विकासशील देश ही सबसे गंभीर जलवायु आपदाओं का सामना कर रहे हैं. हालिया वर्षा-बाढ़ से पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफ्रीकी देशों को अरबों डॉलर का नुकसान हुआ. भारत भी अपवाद नहीं—सीएसई की रिपोर्ट के अनुसार 2022 में भारत में जलवायु-जनित आपदाओं से औसतन हर दिन 35 लोगों की मौत हुई और करीब 50 करोड़ डॉलर की आर्थिक क्षति हुई.

इसी संदर्भ में भारत ने संयुक्त राष्ट्र में दोहराया कि जलवायु न्याय के बिना जलवायु कार्रवाई अधूरी है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहले ही ग्लासगो (सीओपी 26) में 'पंचामृत' का एजेंडा पेश किया था, जिसमें 2070 तक नेट-ज़ीरो लक्ष्य, 2030 तक 500 गीगावॉट अक्षय ऊर्जा क्षमता और कुल ऊर्जा जरूरत का 50 प्रतिशत नवीकरणीय स्रोतों से पूरा करने का संकल्प शामिल है. हाल ही में जारी भारत की ग्रीन एनर्जी प्रगति रिपोर्ट बताती है कि देश पहले ही 180 गीगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन के स्तर पर पहुंच चुका है, जो चीन के बाद दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा विस्तार है. लेकिन सवाल केवल लक्ष्यों का नहीं, वित्त का भी है. विकासशील देशों का तर्क है कि 卐कॉमन बट डिफरेंशिएटेड रिस्पॉन्सिबिलिटी卐 यानी सभी देशों की साझा जिम्मेदारी अलग-अलग क्षमता और ऐतिहासिक बोझ के अनुसार तय होनी चाहिए. 2009 में विकसित देशों ने वादा किया था कि वे हर साल 100 अरब डॉलर जलवायु वित्त के लिए देंगे, लेकिन 2023 तक मुश्किल से 80 अरब डॉलर ही जुट पाए. भारत ने महासभा में यही प्रश्न उठाया—क्या गरीब देशों को केवल भाषणों से राहत मिलेगी या असल वित्तीय सहायता भी ?

यहां भारत की कूटनीति दोहरी धार पर चल रही है. एक ओर वह अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) और जी-20 में ग्रीन डेवेलपमेंट समझौते के माध्यम से वैश्विक दक्षिण को मंच प्रदान कर रहा है, वहीं दूसरी ओर विकसित देशों पर दबाव बना रहा है कि वे तकनीक हस्तांतरण और वित्तीय सहयोग सुनिश्चित करें. यही कारण है कि अफ्रीकी संघ से लेकर लातिन अमेरिकी देशों तक भारत की बात को गंभीरता से सुना जा रहा है. सच यह है कि जलवायु परिवर्तन आज केवल पर्यावरणीय मसला नहीं, बल्कि विकास, अर्थव्यवस्था और वैश्विक न्याय का प्रश्न है. यदि विकसित देश अपनी प्रतिबद्धताओं से पीछे हटते रहे तो दक्षिण के देशों में असंतोष बढ़ेगा और जलवायु सहयोग की पूरी प्रक्रिया खतरे में पड़ सकती है. भारत के लिए यह अवसर है कि वह 'वॉइस ऑफ ग्लोबल साउथ' की अपनी पहल को और व्यापक बनाए और ठोस ग्रीन फंडिंग तंत्र के निर्माण की दिशा में कदम बढ़ाए.

अंतत:, जलवायु परिवर्तन की लड़ाई महज आंकड़ों या सम्मेलनों से नहीं जीती जाएगी. इसे जीतने के लिए जरूरी है कि दुनिया के सबसे कमजोर और सबसे अधिक प्रभावित समाजों को न्याय मिले. भारत इस दिशा में वैश्विक दक्षिण का स्वाभाविक नेता बनकर उभर रहा है. यही नेतृत्व 21वीं सदी में उसकी असली पहचान गढ़ेगा.

# पं. दीनदयाल उपाध्याय: एकात्म मानव दर्शन के प्रणेता

डॉ. विनोद मिश्रा
रानी अवंतीबाई लोधी राजकीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

**25 सितम्बर जयंती पर विशेष**

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय राजनीति के उन महान चिंतकों और कर्मयोगियों में से एक थे, जिन्होंने राष्ट्र के समग्र विकास के लिए आजीवन कार्य किया. वे भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे, परंतु केवल एक राजनेता ही नहीं बल्कि दूरदर्शी दार्शनिक, समाज सुधारक और अद्वितीय संगठनकर्ता भी थे. उनका जीवन सादगी, सेवा और समर्पण का पर्याय था.

**रहस्यमय निधन और गुरुजी की प्रतिक्रिया :** 10 फरवरी 1968 को उनका जीवन रहस्यमय परिस्थितियों में समाप्त हुआ. वे लखनऊ से पटना जा रहे थे और मुगलसराय रेलवे स्टेशन (अब पं. दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन) पर उनकी लाश रेल की पटरी के पास पाई गई. प्रारंभ में यह एक लावारिस शव समझा गया, किंतु कुछ ही देर में पूरा देश स्तब्ध रह गया जब यह स्पष्ट हुआ कि यह जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पं. दीनदयाल उपाध्याय का शव है.

समाचार सुनकर पूरे राष्ट्र में शोक की लहर दौड़ गई. हजारों कार्यकर्ताओं और करोड़ों नागरिकों के हृदयों को यह अपार पीड़ा देने वाली घटना थी. संघ के तत्कालीन सरसंघचालक श्री गुरुजी (माधव सदाशिव गोलवलकर) इस दुखद समाचार से व्यथित हो उठे. उन्होंने गहरे शोक में मात्र इतना कहा—

**प्रभु की इच्छा के आगे हम सभी नतमस्तक हैं**

**सादगी और सेवा का जीवन:** पंडित जी का जीवन अत्यंत सादा था. वे हमेशा साधारण रेल के द्वितीय श्रेणी में यात्रा करते. उनका कहना था कि साधारण डिब्बे में यात्रा करने से न केवल खर्च बचता है बल्कि जनता से जुड़ने और लेखन-पठन का समय भी मिलता है. उनकी मानवता का एक प्रसंग उल्लेखनीय है. एक बार रेल यात्रा के दौरान एक छोटा बालक जूतों पर पालिश करने आया. डिब्बे में बैठे एक अधिकारी ने मना कर दिया. पंडित जी ने स्वयं अपने बैग से जूते निकाले और बालक से पालिश करवाई. बालक को उचित मेहनताना देकर वे मुस्कराए और कहा—

आज तुम्हारी रोज़ी-रोटी में सहयोग कर सका, यही मेरा सौभाग्य है.

यह प्रसंग दर्शाता है कि वे पद या अहंकार से ऊपर उठकर सामान्य व्यक्ति के जीवन से जुड़े थे.

**एकात्म मानव दर्शन:** पं. दीनदयाल उपाध्याय का सबसे बड़ा योगदान उनका एकात्म मानव दर्शन है, जिसे उन्होंने 1965-66 में भारतीय जनसंघ के अधिवेशनों में प्रस्तुत किया. यह दर्शन भारतीय संस्कृति की जड़ों से निकला हुआ एक समग्र जीवन दृष्टिकोण है.

उन्होंने कहा कि पाश्चात्य पूँजीवाद और समाजवाद दोनों ही अपूर्ण विचारधाराएँ हैं. पूँजीवाद व्यक्ति की स्वतंत्रता तो देता है, परंतु उसमें समाज और नैतिक मूल्यों की उपेक्षा होती है. समाजवाद समानता की बात करता है, किंतु उसमें व्यक्ति की स्वतंत्रता और सृजनशीलता दब जाती है. इसके विपरीत एकात्म मानव दर्शन व्यक्ति, समाज और राष्ट्र तीनों के बीच संतुलन स्थापित करता है. इसमें व्यक्ति के चारों पुरुषार्थ—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—को समान महत्व दिया गया है.

**राष्ट्रधर्म की अवधारणा:** पं. उपाध्याय ने कहा कि व्यक्ति, परिवार, समाज, प्रकृति—सबका अपना धर्म है. लेकिन इन सबसे ऊपर है राष्ट्रधर्म. जब संकट की घड़ी आती है तो व्यक्तिगत या पारिवारिक धर्म की अपेक्षा राष्ट्रधर्म सर्वोपरि हो जाता है. यही दृष्टि भारत को एक अखंड और शक्तिशाली राष्ट्र बनाती है.

**अन्त्योदय का विचार:** उनकी राजनीतिक सोच का केंद्र बिंदु था—अन्त्योदय, अर्थात समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति का उत्थान. उन्होंने कहा कि कोई भी नीति, योजना या कार्यक्रम तभी सफल है जब उसका लाभ सबसे कमजोर और वंचित व्यक्ति तक पहुँचे.

आज प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्ज्वला योजना, किसान सम्मान निधि, फसल बीमा, उजाला योजना जैसी अनेक योजनाओं में अन्त्योदय की झलक स्पष्ट दिखाई देती है. यह पं. उपाध्याय के विचारों की ही प्रतिध्वनि है.

**संगठन और नेतृत्व क्षमता:** दीनदयाल जी का सम्पूर्ण जीवन संगठन को समर्पित था. वे सत्ता या पद की लालसा से दूर रहे. जनसंघ के कार्यकर्ताओं को वे सदा प्रेरित करते कि संगठन ही शक्ति है और सत्ता केवल साधन. उनका मानना था कि सत्ता व्यक्ति को भ्रष्ट कर सकती है, परंतु यदि संगठन मजबूत है तो समाज और राष्ट्र को सही दिशा दी जा सकती है.

**योजनाओं और नीतियों पर दृष्टिकोण:** वे योजनाओं और नीतियों में व्यर्थ के दिखावे और भ्रष्टाचार के विरोधी थे. उन्होंने योजना आयोग को प्लानिंग कमीशन न कहकर लूट कमीशन तक कह डाला, क्योंकि उनका मानना था कि योजनाएँ केवल आंकड़ों में सीमित हो गई हैं, जनता की मूलभूत समस्याओं का समाधान नहीं करतीं.

लेखक- मध्यप्रदेश शासन संस्कृति, पर्यटन, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व विभाग के राज्यमंत्री हैं

# भारत की जीवंत आत्मा के उपासक पंडित दीनदयाल उपाध्याय

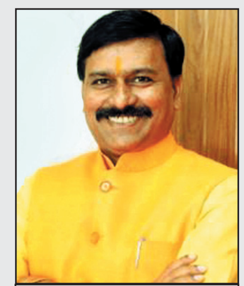

धर्मेंद्र सिंह लोधी

भारत वर्ष की महान् और गौरवशाली संस्कृति को समय-समय पर अनेक महापुरूषों ने अपने चिंतन एवं दर्शन से समृद्ध किया है. ऐसे ही एक महान् और आदर्श व्यक्तित्व हैं, पंडित दीनदयाल उपाध्याय, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन मानत सेवा, समाज सेवा और राष्ट्र सेवा के लिए समर्पित कर दिया. पंडित दीनदयाल उपाध्याय आधुनिक भारत के एक संत तुल्य व्यक्तित्व थे. उनका सामाजिक, आर्थिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक और राजनैतिक चिंतन, राष्ट्रवाद और सामाजिक समानता पर आधारित था. वसुधैव कुटुम्बकम की भावना पर आधारित उनका एकात्म मानववाद का दर्शन आधुनिक संदर्भ में आज भी मानव जाति के लिए पथ प्रदर्शक है.

पंडित जी का एकात्म मानववाद भारतीय जन-जीवन की आवश्यकताओं और चेतना के अनुरूप एक समग्र और संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करता है. पंडित जी का मानना था कि पूंजीवाद और साम्यवाद जैसी पाश्चात्य विचारधाराएं भारतीय समाज के अनुरूप नहीं हैं. क्योंकि, इन विचारधाराओं में या तो व्यक्तिवाद को सर्वोपरि रखा गया है या फिर व्यक्ति को राज्य का उपकरण मान लिया गया है. जबकि, वास्तव में व्यकिए, समाज, प्रकृति और ईश्वर के बीच एकात्मता और समन्वय होना चाहिए. पंडित जी का एकात्म मानववाद आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत है और शारीर, मन, बुद्धि और आत्मा के संतुलित विकास का मार्ग प्रशस्त करता है. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक रहे पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक कुशल राजनीतिज्ञ, कार्यनिक और चिंतक थे. राजा राम मोहन राय स्वामी विवकेकानंद और स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे दार्शनिकों ने भारतीय पुनर्जागरण का जो पुनीत कार्य प्रारंभ किया था, उसका अंतिम पड़ाव कदाचित पंडित दीनदयाल ही थे. गांधी जी के सर्वोदय की दार्यानिक अवधारणा के अनुक्रम में पंडित दीनदयाल ने एक सर्वगामी मानव दर्शन प्रस्तुत किया जो मानव के मानव होने की सार्थकता को निरूपित करता है. पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक प्रखर राष्ट्रवादी चिंतक थे और राष्ट्र की एकता और अखंडता के पक्षपर पे. उन्होंने राष्ट्र को केवल भूमि, जनसंख्या और शासन की इकाई नहीं माना. उनका मानना था कि राष्ट्र एक जीवत आत्मा है और भारत की आमा उसकी संस्कृति में निहित है. पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिंतन भारतीयता की आत्मा से जुड़ा हुआ था. उन्होंने राजनीति को नैतिकता, सांस्कृतिक चेतना और सेवा भावना से जोड़ने का प्रयास किया. उनका चिंतन भारतीय राजनीति को दिशा, दृष्टि और दर्शन प्रदान करता है. आज भी उनके विचार न केवल राजनीतिक विमा कर हिस्सा है, बल्कि राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा भी देते हैं. उन्होंने राजनीति में नैतिकता और राष्ट्रधर्म की प्राथमिकता दी. उनके अनुसार राजनीति का चरित्र सेवा त्याग और सायाचार पर आधारित होना चाहिए. आज जब भारत विकसित राष्ट्र की दिशा में अग्रसर है और आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा को बल मिल रहा है, तब पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिंतन और अधिक प्रासंगिक बन गया है. पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के चितन का आधार भारतीय संस्कृति व्यजित और समाज राजनीति अर्थनीति और मानववाद था. उनके सिद्धांतों का आधार संपूर्ण मानव का शान है. मानवात उनके दर्शन का आधारभूत पक्ष है. उनका चिंतन बिना किसी भेद-भाव के समग्र मानव समुदाय के लिये कल्याण की भावना के रूप में रहा है.

पंडित जी का सामाजिक चिंतन समरसता पर आधारित था. वे समाज में वर्ग, जाति, भाषा, लिंग या धर्म के आधार पर भेदभाव के कट्टर विरोधी थे. उन्होंने भारतीय समाज को केवल आर्थिक या भौतिक दृष्टि से नहीं देखा बल्कि उसे संस्कृति नैतिकता और धर्म के आलोक में पारिभाषित किया. उनका मानना था कि भारतीय संस्कृति की आत्मा सनातन मूल्य और सेवाधर्म भारतीय समाज के सामाजिक चिंतन का मूत आधार हैं. उन्होंने कहा कि जिस समाज में सेवा की भावना नहीं है, वह समाज आत्महीन हो जाता है. इसलिये उन्होंने सेवा ही धर्म है को अपना जीवन मंत्र बनाया. पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारत की महान संस्कृति के अधिष्वान पर ही राष्ट्रवाद को गढ़ना चाहते थे. वे विश्व ज्ञान और आज तक की परम्परा के आधार पर ऐसे भारतवर्ष का निर्माण करना चाहते थे, जो हमारे पूर्वजों से भी अधिक गौरवशाली हो. वे चाहते थे कि भारत वर्ष में जन्मा प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास करता हुआ संपूर्ण मानवता ही नहीं अपितु सृष्टि के साथ एकात्मकता का साक्षात्कार कर नर से नारायण बनने में समर्थ हो सके. पंडित दीनदयाल उपाध्याय का दार्शनिक चिंतन एक ऐसा प्रकाश स्तंभ है, जो भारतीय समाज को अपनी जड़ों से जोड़ते हुए विकास की ओर अग्रसर करता है. उनका एकात्म मानववाद न केवल वैचारिक दृष्टि से समृद्ध है, बल्कि व्यवहारिक जीवन में भी संतुलन और समरसता की भावना की प्रेरित करता है.

# हठी इजराइल टस से मस नहीं होगा

**यद्यपि** ब्रिटेन यात्रा के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप का ब्रिटिश सम्राट चार्ल्स ने शाही स्वागत किया लेकिन ट्रंप की इजराइल समर्थक नीति को स्वीकार करने की बजाय ब्रिटेन ने फिलिस्तीन को औपचारिक तौर पर स्वतंत्र देश के रूप में मान्यता दी. केवल ब्रिटेन ही नहीं, बल्कि कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस और पुर्तगाल सहित लगभग 150 देशों ने फिलिस्तीन को मान्यता देकर अमेरिका और इजराइल को करारा झटका दिया है. यूएन के 193 सदस्य देशों में से लगभग 75 फीसदी देश फिलिस्तीन को मान्यता दे चुके हैं. उन्होंने दिखा दिया कि वह मध्य पूर्व संबंधी नीतियों में अमेरिका के पिछलग्गू नहीं हैं. ब्रिटिश पीएम कीथ स्टारमर का यह कथन उल्लेखनीय है कि %दो राष्ट्र समाधान% ही शांति का मार्ग है. इजराइल और फिलिस्तीन अलग-अलग देश बने रहना चाहिए. ब्रिटेन ने यह भी कहा कि इजराइल वेस्ट बैंक पर कब्जा न करे. गाजा पट्टी को खाली कर वहां पर्यटकों के लिए रिवेरिया बनाने का सपना देखने वाले ट्रंप ने कहा कि फिलिस्तीन को मान्यता देने को लेकर उनकी राय ब्रिटेन से मेल नहीं खाती. इजराइल के हर आक्रामक कदम को अमेरिका का पूरा समर्थन मिलता रहा है. इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन

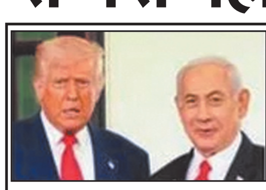

*अमेरिका की राजनीति में यहूदी लॉबी काफी मजबूत है जिस पर ट्रंप निर्भर हैं. इजराइल फिलिस्तीन अथॉरिटी (पीए) को आर्थिक रूप से कमजोर कर रहा है और युद्ध के बाद उसे गाजा सौंपना नहीं चाहता. यूएन फिलिस्तीन को देश का दर्जा देने के लिए चाहे जितने प्रस्ताव पारित कर ले इजराइल टस से मस नहीं होगा.*

नेतन्याहू ने कहा कि फिलिस्तीन को स्वतंत्र देश मानना आतंकवाद को पुरस्कृत करना है. जॉर्डन नदी के पश्चिम में फिलिस्तीन देश नहीं बनेगा. उनकी सरकार ने वेस्ट बैंक में यहूदी बस्तियों को बढ़ाकर दोगुना कर दिया है. गाजा युद्ध 2 वर्ष से जारी है. गाजा मिसाइल हमले से खंडहर बन चुका है. वहां के बचे-खुचे बच्चे, बूढ़े व महिलाएं भुखमरी का शिकार हो रहे हैं. खाद्य पदार्थ लेकर जाने वाले एनजीओ के वाहनों पर बमबारी की जाती है और खाना लेने आए लोगों को गोली मार दी जाती है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

## निशानेबाज

# मध्यप्रदेश सरकार का अनोखा अंदाज लाखों दिवंगतों को मुफ्त अनाज

**पड़ोसी** ने हमसे कहा, निशानेबाज, मध्यप्रदेश में 12,00,000 स्वर्गवासी मुफ्त का अनाज खा रहे हैं. इससे हमें कहावत याद आने लगी है अंधेर नगरी चौपट राजा ! कुएं में भांग पड़ी है ! जब लाखों लोग दिवंगत हो चुके तो उनके नाम पर फ्री राशन कैसे और क्यों जारी किया जा रहा है ?

हमने कहा, ऐसा मानकर चलिए कि जो लोग चल बसे उनकी आत्मा की तृप्ति के लिए मध्यप्रदेश सरकार पिंडदान कर रही है. यह शास्त्रों के अनुसार सत्कर्म और कर्तव्यपालन है. हाल ही में पितृपक्ष समाप्त हुआ है. यह मुफ्त का राशन दिवंगतों तक पहुंच गया होगा फिर वह चाहे जिस लोक में रह रहे होंगे.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, आप भ्रष्टाचार का समर्थन मत कीजिए. मध्यप्रदेश में मुफ्त का राशन लेने वाले 24 लाख हितग्राही अपात्र पाए गए हैं. इनमें 1.57 लाख ऐसे भी लोग हैं जिनकी आय 6 लाख से अधिक है. 18,000 लोग कॉरपोरेट मंत्रालय में रजिस्टर्ड कंपनी के डायरेक्टर हैं. इन्हें

मुफ्त अनाज लेते शर्म नहीं आई. प्रशासन भी इतने वर्षों से धृतराष्ट्र बना रहा. इस तरह की धांधली निंदनीय है.

हमने कहा, अन्नदान की बड़ी महिमा है. इसे लेकर पौराणिक कथा सुनिए. महर्षि भृगु के पिता वरुण ब्रम्हनिष्ठ ऋषि थे. एक बार भृगु को जिज्ञासा हुई कि पिता से ब्रम्ह का बोध प्राप्त करना चाहिए. उन्होंने पिता से पूछा कि ब्रम्ह क्या है ? वरुण ने भृगु के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा- अन्नं प्राणं चक्षु श्रोभं मनो वचमिति अर्थात अन्न, प्राण, तप, विज्ञान, आनंद, मन और वाणी ब्रम्ह हैं. अन्न से ही ये सब उत्पन्न होते हैं. हम अन्न खाकर जीवित रहते हैं. उससे ही प्राणों की रक्षा होती है इसलिए अन्न पूर्ण ब्रम्ह है. भूखे व्यक्ति का दिमाग, हाथ-पैर कुछ नहीं चल सकते. वह निढाल हो जाता है.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, एक कथा हमने भी सुनी है कि दानवीर कर्ण जब यमलोक गए तो उनके सामने सोना-चांदी और अपार संपत्ति का ढेर रख दिया गया, लेकिन खाने के लिए कुछ भी नहीं था. उनके पूछने पर कहा गया कि तुमने सब कुछ किया लेकिन अपने पूर्वजों की स्मृति में अन्नदान नहीं किया इसलिए तुम्हें 15 दिनों के लिए वापस पृथ्वी पर भेजा जाता है. जाकर पितरों के लिए अन्नदान करो और फिर वापस आकर स्वर्ग में सुख से रहो. कर्ण ने यही किया. तभी से पितृपक्ष की प्रथा शुरू हुई. क्या हम ऐसा मान लें कि मध्यप्रदेश सरकार ने भी लाखों स्वर्गवासियों के नाम पर मुफ्त अन्न देकर अपनी पूर्वज सरकारों को तृप्त किया होगा ? आखिर किसी न किसी के पेट में अनाज गया होगा और उसे तृप्ति महसूस हुई होगी.

## शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

### CROSS WORD 12032 - डॉ. सागर खादीवाला

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | | 3 | | 4 | ■ | 5 |
| 6 | | ■ | | ■ | 7 | 8 | |
| | ■ | 9 | | 10 | ■ | | ■ |
| 11 | | | ■ | 12 | 13 | | 14 |
| | ■ | 15 | 16 | ■ | 17 | | |
| ■ | 18 | | | | | ■ | |
| 19 | | ■ | | ■ | 20 | 21 | |
| 22 | | | ■ | 23 | | | ■ |

**बाएं से दाएं**
1. भारतीय सैनिकों को उनके वीरतापूर्ण प्रदर्शन के लिए दिया जाने वाला पुरस्कार 6. प्रत्येक, एक-एक, नष्ट करने वाला 7. दुख, रंज, उदासी, विशाद (उर्दू) 9. स्त्री, औरत 11. शुक्ल पक्ष की अंतिम तिथि 12. स्वामिनी 15. टेढ़ा (सं.) 17. प्रणाम, अभिवादन 18. उबड़ खाबड़ 19. प्रचंद्र उत्कट 20. आभार सहित 22. टपकने या चूने की क्रिया 23. चयन, चुनने की क्रिया या भाव

**ऊपर से नीचे**
1. महत्ववाला 2. पराजय, माला 3. घोड़े की काठी के नीचे पैर रखने के पायदान (उर्दू) 4. सिलसिला, तरतीब (सं.) 5. बाज की जाति की एक चिड़िया 8. दिल्ली स्थित प्रसिद्ध किला 9. कृष्णपक्ष की अंतिम तिथि 10. तिब्बतियों के धर्माचार्य 13. लसयुक्त होना 14. झुककर अभिवादन करना 16. सिलसिलेवार, धीरे-धीरे 18. बड़ा भाई 19. एक उपसर्ग जो शब्दों के आगे लगता है 21. विचार, खयाल, दर

### Solution 12031

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| का | न | भ | र | ना | ■ | आ | ज |
| म | क्का | ■ | ■ | क | था | न | क |
| धे | ■ | ■ | बे | ना | म | ■ | ड़ |
| नु | मा | इ | श | ■ | ना | रू | ना |
| ■ | चा | ला | की | ■ | ■ | रा | ■ |
| कु | ■ | ■ | म | ह | बू | ब | ■ |
| श | रा | फ | त | ■ | झ | ■ | जा |
| ल | ह | र | ■ | आ | ना | का | नी |

## ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

### आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में रूके कार्यो की शुरूआत होगी, भूमि भवन आदि का सुख मिलेगा, वर्ष के मध्य में नई योजनाओं पर विचार विमर्श होगा, अधिकारियों के सहयोग से कार्यक्षेत्र में एवं प्रभाव में वृद्धि होगी, वर्ष के अन्त में आर्थिक कमी के कारण योजनायें वाधित होंगी, शिक्षा में अचानक व्यवधान आयेगा, आकस्मिक यात्रा में व्यय होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भूमि भवन आदि का सुख मिलेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को नई योजनाओं पर विचार विमर्श होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों की शिक्षा में अचानक व्यवधान आ सकता है, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को लाभदायक अवसर प्राप्त होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को यश प्राप्त होगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को निजी दायित्वों की पूर्ति होगी.

### आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान, विवेकी होगा. न्यायप्रिय रहेगा. अस्थिर स्वाभाव का रहने के कारण कल्पनाओं में सुखद अनुभूति करने वाला होगा. जलोत्पन्न वस्तुओं के व्यापार से लाभ कमायेगा. माता पिता का विशेष भक्त होगा.

### उदयकालीन ग्रह चाल

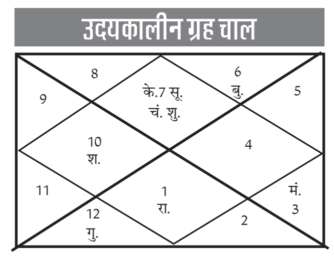


### पंचांग

रा.मि. 03 संवत 2082 आश्विन शुक्ल चतुर्थी गुरूवासरे दिन-रात, स्वाती नक्षत्रे शाम 5/55, वैधृति योगे रात 9/51, वणिज करणे सू.उ. 6/1, सू.अ. 5/59, चन्द्रचार तुला, पर्व- वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, शु.रा. 7, 9, 10, 1, 2, 5 अ.रा. 8, 11, 12, 3, 4, 6 शुभांक- 9, 2, 6.

### व्यापार भविष्य

आश्विन शुक्ल चतुर्थी को स्वाती नक्षत्र के प्रभाव से गुड़, खांड़, मोट, सरसों, अलसी, अरंडी, बिनौला, तेल, कपूर, के भाव में तेजी का रूख रहेगा. भाग्यांक 1441 है.

**मेष**- धार्मिक कार्यो में रूचि एवं लगन रहेगी. विलासिता की वस्तुओंका संचय होगा. पुराने मित्र से अचानक मुलाकात होने से प्रसन्नता होगी.

**वृषभ**- राजकीय कार्यो में खर्च होगा. व्यापार में लाभ की प्राप्ति होगी. मानसिक शांति बनी रहेगी. यश मिलेगा. शुभ समाचार प्राप्त होने का योग है.

**मिथुन**- पारिवारिक सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य सफल होगा. व्यापार व्यवसाय अच्छा रहेगा. स्त्री जाति की सलाह से सुख और सफलता प्राप्त होने का योग है.

**कर्क**- अनुकूल वातावरण में काम करने का अवसर प्राप्त होगा. भौतिक सुख एवं मनोरंजन होगा. लाभदायक समाचार मिलेगा. मानसिक प्रसन्नता रहेगी.

**सिंह**- आर्थिक एवं व्यापारिक गतिविधियों का विस्तार होगा. पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा. लाभदायक अवसरों की प्राप्ति होगी.

**कन्या**- शुभ समाचार से खुशी होगी. मनोरंजन का लाभ मिलेगा. मानसिक प्रसन्नता में वृद्धि होगी. मित्रता लाभदायक उपयोगी और सुखद रहेगी.

**तुला**- राजकीय कार्यो में सफलता मिलेगी. आय के साधनों में वृद्धि होगी. सम्मान प्राप्ति का योग है. आशा से अधिक उपलब्धि रहेगी.

**वृश्चिक**- पारिवारिक वातावरण सुखद एवं प्रसन्नतादायक रहेगा. मान सम्मान में वृद्धि होगी. यश एवं कीर्ति प्राप्त होगी. शारीरिक पीड़ा संभाव्य है.

**धनु**- कृषि कार्यो में खर्च की योजना बनेगी. लाभ के अवसर प्राप्त होंगे. योजनाओं का क्रियान्यन होगा. प्रसन्नता बनी रहेगी. श्रम अधिक होगा.

**मकर**- राजकीय कार्यो में सफलता मिलेगी. साझेदारी के कार्यो में सावधानी रखें. मांगलिक कार्यो पर विचार विमर्श होगा. संयम रखें.

**कुम्भ**- सामाजिक कार्य में रूचि रहेगी. परिश्रम के कार्यो में उचित परिणाम प्राप्त होंगे. यात्रा टालना आपके लिये हितकर रहेगा. पदोन्नति की चर्चा होगी.

**मीन**- धन प्राप्ति के लिये प्रयास करना पड़ेगा. मानसिक श्रम अधिक होगा. यात्रा में उठाईगीरों से सावधानी बांछनीय. यश प्राप्त होगा.

### SUDOKU 7164

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | | | | | | | 4 | |
| | | 5 | | 3 | | | 7 | |
| | | | | | 8 | | | 2 |
| | | | | | 1 | 9 | | |
| | 2 | | | | | | 8 | |
| | | 6 | 7 | | | | | |
| 1 | | | 4 | | | | | |
| | 9 | | | 2 | | 5 | | |
| | 8 | | | | | | | 1 |

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-दोकू 7163

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | 4 | 5 | 6 | 1 | 3 | 7 | 2 | 9 |
| 7 | 2 | 6 | 4 | 9 | 5 | 3 | 8 | 1 |
| 9 | 3 | 1 | 7 | 8 | 2 | 6 | 5 | 4 |
| 1 | 7 | 2 | 9 | 6 | 8 | 4 | 3 | 5 |
| 5 | 6 | 9 | 3 | 2 | 4 | 1 | 7 | 8 |
| 4 | 8 | 3 | 5 | 7 | 1 | 9 | 6 | 2 |
| 2 | 9 | 7 | 1 | 5 | 6 | 8 | 4 | 3 |
| 3 | 1 | 8 | 2 | 4 | 7 | 5 | 9 | 6 |
| 6 | 5 | 4 | 8 | 3 | 9 | 2 | 1 | 7 |